

डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म, 1 और 2 सैमुअल, सत्र 28, 2 सैमुअल 24

© 2024 रॉबर्ट चिशोल्म और टेड हिल्लेब्रांट

यह डॉ. बॉब चिशोल्म 1 और 2 सैमुअल पर अपने शिक्षण में हैं। यह अंतिम सत्र है, सत्र 28, डेविड इज़राइल पर प्लेग लाता है, 2 सैमुअल अध्याय 24।

हम सैमुअल की पुस्तकों में अपने अध्ययन के अंत पर आ गए हैं और हम पुस्तक के अंतिम अध्याय, 2 सैमुअल अध्याय 24 को देखने जा रहे हैं, जिसका मैंने शीर्षक दिया है डेविड इसराइल पर एक प्लेग लाता है।

और यह फिर से कोई सुखद अध्याय नहीं है। सैमुअल की किताबों में बहुत सारे वृत्तांत विभिन्न स्तरों पर परेशान करने वाले हैं और यह भी है। दाऊद इस्राएल पर विपत्ति लाता है।

उपसंहार की पहली कहानी में, यह शाऊल का पाप था जिसने समस्याएं पैदा की थीं और डेविड को एक तरह से शाही न्यायाधीश के रूप में काम करना पड़ा था। इस परिच्छेद में, इस्राएल के पाप का निर्णय शीघ्र होने वाला है और दाऊद स्वयं पाप करने जा रहा है और दाऊद अंततः एक शाही पुजारी या मध्यस्थ बनने जा रहा है। और इसलिए, हम इस अध्याय में यह देखने जा रहे हैं कि पाप से क्रोधित होने पर, भगवान पापियों को गंभीर रूप से दंडित कर सकते हैं, लेकिन जब पापी पश्चाताप करते हैं तो वह अपना निर्णय वापस लेने को तैयार होते हैं।

हम 2 शमूअल अध्याय 24 श्लोक 1 में पढ़ते हैं, यहोवा का क्रोध इस्राएल पर भड़क उठा, और उस ने दाऊद को उनके विरुद्ध भड़काकर कहा, जाकर इस्राएल और यहूदा की गिनती ले। यहोवा का क्रोध इस्राएल पर भड़क उठा। हमें इसका कोई कारण नहीं बताया गया है।

क्या यहोवा इस्राएल पर मनमाने ढंग से क्रोधित हो रहा था? मुझे ऐसा नहीं लगता। जब हम उस तरह की भाषा पढ़ते हैं, आमतौर पर, हमेशा वास्तव में, कहीं और जब इसका उपयोग किया जाता है, तो भगवान के क्रोधित होने का एक अच्छा कारण होता है, और यह मानवीय पाप है। शमूअल की पुस्तकों में केवल एक अन्य स्थान है जहाँ प्रभु का क्रोध किसी के विरुद्ध भड़कता है।

यह 2 शमूअल अध्याय 6 श्लोक 7 में है जब उज्जा ने सन्दूक को छूने के लिए हाथ बढ़ाया और परमेश्वर की पवित्रता का उल्लंघन किया, तब यहोवा का क्रोध उस पर भड़क उठा और यहोवा ने उसे मार डाला। लेकिन उस अवसर पर, हम समझते हैं कि प्रभु के दृष्टिकोण से उनके क्रोध के भड़कने का अच्छा कारण था। पुराने नियम में अन्यत्र, जब प्रभु का क्रोध अपने लोगों के विरुद्ध भड़कता है, तो यह निश्चित रूप से पाप के कारण होता है।

और यदि आप पुराने नियम में उस वाक्यांश का पता लगाते हैं, तो आप देखेंगे कि यह निर्गमन और संख्या और व्यवस्थाविवरण और जोशुआ और न्यायाधीशों, 2 राजाओं, यशायाह में दिखाई देता है। इन सभी मामलों में जहां भगवान का क्रोध किसी के विरुद्ध भड़कता है, घोर विद्रोह,

अक्सर मूर्तिपूजा के रूप में, वह पाप है जो इस दैवीय क्रोध को प्रेरित करता है। इसलिए, जब हम पद 1 का पहला भाग पढ़ते हैं तो हम मान सकते हैं कि प्रभु का क्रोध इस्राएल के विरुद्ध भड़का था क्योंकि इस्राएल ने किसी तरह से पाप किया था।

हमें यह नहीं बताया गया कि कैसे। और फिर भगवान कुछ ऐसा करते हैं जो बहुत अजीब लगता है। उसने दाऊद को उनके विरुद्ध भड़काया।

इसलिए, वह डेविड को कुछ ऐसा करने के लिए उकसाने जा रहा है जो बदले में राष्ट्र पर निर्णय लाएगा। और उसने दाऊद को उकसाया कि वह जाकर जनगणना करे, कि वह चारों ओर घूमे और गिनें कि उसके पास कितने योद्धा हैं। अध्याय में बाद में डेविड की स्वयं की स्वीकारोक्ति से, डेविड यह मानने जा रहा है कि ऐसा करना एक पापपूर्ण कार्य था।

ऐसा करना गलत था. और इसलिए, आप यहां इस तथ्य से बच नहीं सकते कि प्रभु, इस्राएल पर अपने फैसले में, डेविड को कुछ ऐसा करने के लिए प्रेरित करते हैं जो गलत था। मैं आपके बारे में नहीं जानता, लेकिन यह मुझे परेशान करता है क्योंकि यह इस विचार के विपरीत लगता है कि भगवान लोगों को पाप करने के लिए प्रलोभित नहीं करते हैं।

जेम्स हमें यह बताता है। लेकिन कभी-कभी जब वह लोगों के खिलाफ निर्णय लागू कर रहा होता है, तो वह इस तरह की चीज़ का सहारा लेगा। यह शब्द जिसका अनुवाद उकसाया गया है, इसका उपयोग पुराने नियम में अन्यत्र कुछ दिलचस्प तरीकों से किया गया है, कभी सकारात्मक रूप से, कभी नकारात्मक रूप से।

इसका उपयोग एक बेटी अक्सा द्वारा किया जाता है, जो जजेज चैप्टर 1 में अपने पिता कालेब को उपहार देने के लिए आकर्षित करती है। जैसा कि बेटियां कभी-कभी करना चाहती हैं। उनमें अपने पिताओं को कुछ न कुछ देने के लिए आकर्षित करने की क्षमता होती है। इसका उपयोग अय्यूब 36 में किसी व्यक्ति को लुभाने वाली दौलत के लिए किया जाता है।

इसका उपयोग कई ग्रंथों में एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को एक निश्चित कार्यविधि का पालन करने के लिए प्रेरित करने या उकसाने के लिए भी किया जाता है। व्यवस्थाविवरण 13 में एक भविष्यवक्ता द्वारा लोगों को मूर्तियों की पूजा करने के लिए लुभाने के लिए इसका नकारात्मक उपयोग किया गया है। अजीब तरह से, शैतान ने इसका उपयोग अय्यूब 2:3 में अय्यूब की परीक्षा लेने के लिए परमेश्वर को उकसाने के लिए किया है। प्रभु वास्तव में शैतान से कहते हैं, उसे डांटते हुए, तुमने मुझे उकसाया है, इस क्रिया का उपयोग करता है, तुमने मुझे मेरे नौकर अय्यूब के खिलाफ खड़ा किया है।

और यह लगभग भगवान की ओर से एक आरोप है। जब ईश्वर कहीं और शब्द का विषय है, तो इसका सकारात्मक रूप से उपयोग किया जाता है कि ईश्वर एक शत्रु को यहूदा के राजा यहोशापात से दूर कर रहा है। भगवान ने शत्रु को उकसाया, शत्रु को आकर्षित किया, और शत्रु को एक अलग दिशा में जाने के लिए प्रेरित किया।

इसका उपयोग अय्यूब 36 में लोगों को विनाश से आशीर्वाद की ओर ले जाने के लिए ईश्वर को लुभाने या लुभाने के प्रयास के लिए भी किया जाता है। एलीहू इसका उपयोग इसी तरह करता है। तो, इसमें वास्तव में किसी को मनाने का विचार है, और यहां उकसाने का अनुवाद किया गया है।

इसलिए, प्रभु, इस्राएल के विरुद्ध अपने फैसले के हिस्से के रूप में, जैसा कि वह क्रोधित है, डेविड को जनगणना लेने के लिए राजी करता है। और यह कैसे उचित हो सकता है, इस पर बात करना आज हमारी चर्चा से परे है। लेकिन पापियों का न्याय करते समय प्रभु कभी-कभी इतना निष्पक्ष नहीं होने का निर्णय लेते हैं।

यह सब उसके न्याय का हिस्सा है. अब कुछ लोग 1 इतिहास में समानांतर पाठ पर जाकर इस समस्या का समाधान करते हैं। 1 इतिहास 21 में एक अंश है जो उसी आधार को कवर करता है, लेकिन यह थोड़ा अलग है।

और यह 1 इतिहास 21.1 में कहता है, एनआईवी अनुवाद करता है, शैतान इज़राइल के खिलाफ उठ खड़ा हुआ और डेविड को इज़राइल की जनगणना लेने के लिए उकसाया। भगवान के क्रोध या उस जैसी किसी चीज़ का कोई संदर्भ नहीं। और इसलिए, कुछ लोग कहेंगे, देखो वास्तव में यह शैतान ही था जिसने यह किया।

लेकिन मुझे यह समस्याग्रस्त लगता है और इसका कारण यहां बताया गया है। क्योंकि इस परिच्छेद के हिब्रू पाठ में, शैतान शब्द का प्रयोग किया गया है, जो अंततः शैतान का उचित नाम बन जाता है। लेकिन पुराने नियम में, जब शैतान का उपयोग किया जाता है, तो शैतान का हर मतलब एक विरोधी या दुश्मन होता है।

और जब इसका उपयोग पुराने नियम में किसी निश्चित लेख के बिना किया जाता है, तो दूसरे शब्दों में, यह हा नहीं है। हा हिब्रू में निश्चित लेख है। यह शत्रु, शैतान नहीं है।

यह सिर्फ शैतान है, एक विरोधी। और जब पुराने नियम में कहीं और लेख के बिना इसका उपयोग किया जाता है, तो यह शैतान को संदर्भित नहीं करता है। यह आम तौर पर एक मानव विरोधी को संदर्भित करता है।

वहाँ एक जगह है जहाँ प्रभु का दूत बिलाम की स्थिति में विरोधी है जब वह प्रकट होता है। उस पाठ में उसे एक प्रतिद्वंद्वी कहा गया है। जब पुराने नियम में शैतान का उल्लेख किया जाता है, और पुराने नियम में उसका अक्सर उल्लेख नहीं किया जाता है, तो लेख का उपयोग किया जाता है।

अय्यूब 1 और 2 में, वह हा-शैतान है। वह विरोधी है. यह एक शीर्षक है.

जकर्याह मार्ग में भी यही मामला है जहां शैतान का उल्लेख किया गया है। इसलिए पुराने नियम में उपयोग के आधार पर, मुझे लगता है कि इतिहास केवल एक प्रतिद्वंद्वी के बारे में बात कर रहा है। हो सकता है कि मोआबियों, एदोमियों, या किसी प्रकार के आस-पास के लोगों, किसी विरोधी ने दाऊद को लोगों की संख्या बढ़ाने के लिए उकसाया हो।

और मुझे अभी भी इसे 2 सैमुअल 24 के साथ जोड़ना है। मैं 2 सैमुअल 24 को महत्व नहीं दे सकता और दिखावा नहीं कर सकता कि इसका अस्तित्व ही नहीं है। मुझे क्रॉनिकल्स परिच्छेद को सैमुअल परिच्छेद के साथ लाना है।

ठीक है, यहोवा का क्रोध इस्राएल पर भड़का और उसने दाऊद को उनके विरुद्ध भड़काया। इतिहास के पाठ को सामने लाते हुए, मैं कहूंगा कि उसने इसे अपने प्रतिद्वंद्वी डेविड को उकसाने के लिए अपने साधन के रूप में इस्तेमाल किया। भले ही आप क्रॉनिकल्स पर जोर दें, जबकि क्रॉनिकल्स अपेक्षाकृत देर से आया है, हो सकता है कि उस समय तक शैतान को एक उचित नाम के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा हो।

और इसलिए, हम शैतान का अनुवाद कर सकते हैं। पुराने नियम में यह एकमात्र स्थान होगा जहां ऐसा होगा। फिर भी, मुझे नहीं लगता कि इस पर ईश्वर की कोई पकड़ नहीं है क्योंकि डेविड को उकसाने में शैतान बस उसका साधन होगा।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप इतिहास के पहले अंश के साथ क्या करते हैं, मुझे नहीं लगता कि यह 2 शमूएल 24 के साथ आपकी समस्या का समाधान करता है। यहोवा का क्रोध इस्राएल के विरुद्ध भड़क उठा और उसने दाऊद को उनके विरुद्ध भड़काया। सैमुअल ने किसी शैतान का कोई उल्लेख नहीं किया है।

और इसलिए, चाहे वह शैतान हो, मुझे नहीं लगता कि वह है, या कोई मानव विरोधी, इतिहास में मेरी प्राथमिकता यही होगी, वह बस साधन है। प्रभु ही वह है जो यह सब व्यवस्थित कर रहा है। तो, डेविड जाता है और जनगणना करता है।

और राजा ने योआब और सेना से कहा, मैं चाहता हूँ कि तुम दान से ले कर बेशेबा तक के सब गोत्रों में घूमो और लड़नेवालोंको गिन लो, क्योंकि मैं जानना चाहता हूँ कि वे कितने हैं। इससे योआब तुरंत असहज हो जाता है। और उस ने दाऊद से कहा, तेरा परमेश्वर यहोवा सेना को सौगुणा बढ़ा दे।

हमारे पास एक बड़ी सेना हो. बहुत से इस्राएली नवयुवक पैदा हों और सेना का हिस्सा बनें। और मेरे प्रभु राजा की आंखें इसे देख सकें।

परन्तु मेरा प्रभु राजा ऐसा क्यों करना चाहता है? आप ऐसा क्यों करना चाहते हैं? और मुझे लगता है कि इसमें स्पष्ट रूप से विश्वास की कमी की बू आती है। दूसरे शब्दों में, मैं सुरक्षा के लिए भगवान पर भरोसा करता हूँ, लेकिन ईमानदारी से, मैं यह देखना चाहता हूँ कि उस खाते में कितना पैसा है। मैं देखना चाहता हूँ कि मेरे पास कितने सैनिक हैं.

ऐसा प्रतीत होता है कि वह आस्था से नहीं, दृष्टि से चल रहा है। स्पष्ट रूप से, यह बिल्कुल शाऊल जैसा दिखता है। हालाँकि, राजा के शब्द ने योआब और सेना के कमांडरों को खारिज कर दिया।

और वे इस्राएल के योद्धाओं की सूची लेने के लिये राजा के सम्मुख से चले गये। फिर हमने इस बारे में पढ़ा कि कैसे वे पूरे देश में गए, उत्तर की ओर गए और फिर वापस आ गए। और सारे देश में घूमने के बाद वे यरूशलेम को लौट आए, और यह सब होने में नौ महीने और बीस दिन लगे।

और योआब ने राजा को योद्धाओं की गिनती बता दी। और यह इस्राएल और यहूदा से बहुत बड़ी संख्या में है। और फिर श्लोक 10 में, हमने पढ़ा कि डेविड ने लड़ने वालों की गिनती कर ली थी, जिसके बाद उसका विवेक आहत हो गया था।

और वह यहोवा से कहता है, मैं ने जो कुछ किया है उसमें बड़ा पाप किया है। डेविड को एहसास हुआ कि उसने गलत किया है। अब, यह प्रभु ही था जिसने उसे इस्राएल पर अपने फैसले के हिस्से के रूप में ऐसा करने के लिए उकसाया।

परन्तु वह कहता है, अब हे प्रभु, मैं तुझ से बिनती करता हूँ, अपने दास का अधर्म दूर कर। मैंने बहुत ही मूर्खतापूर्ण काम किया है. वह भाषा जो पहले शाऊल के लिए प्रयोग की जाती थी।

और इसलिए, जैसा कि हमने कहा, डेविड यहां कुछ हद तक शाऊल जैसा दिख रहा है। अगली सुबह दाऊद के उठने से पहले, यहोवा का संदेश गाद भविष्यवक्ता के पास पहुँच चुका था। गाद भविष्यद्वक्ता चित्र में प्रवेश करनेवाला है, और उस से कहा गया, जाकर दाऊद से कह, कि यहोवा यही कहता है।

मैं आपको तीन विकल्प दे रहा हूँ. उनमें से एक को चुन लो ताकि मैं तुम्हारे विरुद्ध कार्य कर सकूँ। मुझे ऐसा नहीं लगता कि प्रभु यहां डेविड की क्षमा प्रार्थना का उत्तर देते हैं।

वह एक संदेश लेकर आता है, ठीक है, निर्णय आ रहा है। तुम्हें अपना ज़हर चुनना है। तो, गाद डेविड के पास जाता है, और वह तीन विकल्प बताता है जिन्हें डेविड चुन सकता है।

क्या तुम पर तीन वर्ष का अकाल पड़ेगा? एनआईवी इसका अनुवाद इसी प्रकार करता है। दरअसल, हिब्रू पाठ में सात साल का अकाल बताया गया है। सेप्टुआजेंट एक वैकल्पिक रीडिंग तीन के साथ जाता है, लेकिन मुझे लगता है कि सेप्टुआजेंट अगले दो विकल्पों में उपयोग की गई संख्या के अनुरूप हो सकता है।

इसलिए, मैं सात को संभवतः यहां मूल पाठ मानता हूँ। आपके देश में सात वर्ष तक अकाल रहेगा, या जब आपके शत्रु आपका पीछा कर रहे हों तो आपको तीन महीने तक उनसे भागना पड़ सकता है। तो, हे दाऊद, तुम्हारा वैसे ही पीछा किया जा सकता है जैसे शाऊल ने तीन महीने तक शत्रुओं द्वारा तुम्हारा पीछा किया था।

निःसंदेह, इसका राष्ट्र पर प्रभाव पड़ेगा, क्योंकि यदि राजा इतनी कमजोर जगह पर है कि उसका पीछा किया जाएगा, तो इसका मतलब है कि राष्ट्र पर आक्रमण किया जा रहा है, और इसका इज़राइल पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। या तेरे देश में तीन दिन तक विपत्ति रहेगी। हम इसे जल्दी खत्म कर सकते हैं।

हम पर बहुत गंभीर प्लेग, विनाशकारी प्लेग आ सकता है। यह केवल तीन दिनों तक चलेगा, और हम इसके साथ काम कर सकते हैं। तो अब, इस पर विचार करें।

निर्णय करो कि जिसने मुझे भेजा है, उसे मैं किस प्रकार उत्तर दूँ। तो, ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रभु डेविड को माफ नहीं करेंगे और स्लेट को साफ नहीं करेंगे, क्योंकि याद रखें, यह उतना पाप नहीं है जो डेविड ने किया था, यह वह पाप है जो इज़राइल ने किया था जिसने सबसे पहले प्रभु के क्रोध को भड़काया था। यहाँ यह केवल प्रभु द्वारा दाऊद को दंडित करने का मामला नहीं है।

यह यहोवा इस्राएल को दण्ड देना चाहता है। तो, पद 14 में दाऊद गाद से कहता है, मैं बड़े संकट में हूँ। आइए हम प्रभु के हाथों में पड़ें, क्योंकि उसकी दया महान है।

लेकिन मुझे इंसानों के हाथों में मत पड़ने दो। इसलिए, मुझे लगता है कि डेविड यहां विकल्प नंबर दो को खारिज कर रहे हैं। मैं नहीं चाहता कि शत्रु, मानव शत्रु मेरा पीछा करें।

मैं सीधे भगवान से निपटना पसंद करूँगा क्योंकि भगवान की बड़ी दया है। और डेविड यहां एक शब्द का उपयोग करता है जो दिव्य भावना को संदर्भित करता है। यह दया की भावना है।

यह वह भावना है जो एक भाई दूसरे भाई के लिए रखता है। यूसुफ को यह तब महसूस हुआ जब उसने बिन्यामीन को देखा। यह वह भावना है जो एक माँ अपने बच्चे के लिए रखती है।

और इसलिए, डेविड कह रहा है, भले ही प्रभु ने क्षमा के लिए उसके अनुरोध को स्वीकार नहीं किया है, डेविड कहता है कि प्रभु की दया महान है। मैं उससे सीधे निपटना पसंद करूँगा। वह दयालु हो और क्या जाने हमें कम सजा दे दे।

मुझे लगता है कि डेविड शायद यही उम्मीद कर रहे होंगे। तो, ऐसा लगता है मानो डेविड कह रहे हों, मुझे वह दूसरा विकल्प नहीं चाहिए। मैं मानव उपकरणों से निपटना नहीं चाहता।

आइये चलें अकाल या प्लेग के साथ. और प्रभु ने विपत्ति को चुना, पद 15। इसलिए, पारंपरिक पाठ यही कहता है कि प्रभु ने उस सुबह से लेकर निर्दिष्ट समय के अंत तक इस्राएल पर विपत्ति भेजी।

एक वैकल्पिक वाचन है जो सुबह से रात के खाने के समय तक कहता है। तो, क्या यह तीन दिवसीय प्लेग में से केवल एक दिन है, या यह प्लेग के पूरे समय में जो कुछ हुआ उसका सारांश है? निश्चित नहीं। और दान से बेशेबा तक 70,000 लोग मर गए, अर्थात् उत्तर से दक्षिण तक बहुत से लोग।

तो, यह एक विनाशकारी प्लेग है, किसी प्रकार की बीमारी या कुछ और जिसने लोगों को मारना शुरू कर दिया है। और जब स्वर्गदूत ने यरूशलेम को नाश करने के लिये अपना हाथ बढ़ाया, तब यहोवा उस विपत्ति के कारण पछताया, और लोगों को दुःख देनेवाले दूत से कहा, बस, अपना हाथ हटा ले। यदि प्लेग का समय पहले ही समाप्त हो चुका है, तो ऐसा लगता है कि यह बहुत अधिक होगा।

और यही कारण है कि कुछ लोग सुबह से रात के खाने के समय तक श्लोक 15 को पढ़ना चाहते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि यहाँ क्या होता है, श्लोक 16 के दूसरे भाग से शुरू होकर, एक फ्लैशबैक होता है। और इसलिए, महामारी तीन दिनों से देश को तबाह कर रही है और अब यहोवा यरूशलेम को समाप्त करने के लिए तैयार है, और फिर वह विपत्ति के बारे में शांत हो जाता है और स्वर्गदूत से कहता है, अपना हाथ हटा लो।

श्लोक 16बी से शुरू करते हुए, हमारे पास एक फ्लैशबैक है और हमें इस बारे में थोड़ा और विवरण मिलता है कि प्रभु क्यों नरम हुए। और सत्य रूप में, भगवान इस संदर्भ में दयालु साबित हो रहे हैं। डेविड सही थे।

खैर, मैं प्रभु के साथ अपने मौके लेना पसंद करूंगा क्योंकि वह दयालु भगवान हैं। तो, 16बी में एक फ्लैशबैक। अब, यहोवा का दूत यबूसी अरुणा के खलिहान पर था।

और जब दाऊद ने स्वर्गदूत को देखा, तो दाऊद को प्रभु के दूत को देखने की क्षमता दी गई, जो यहां विनाश का प्रभु का साधन है, जो लोगों को मार रहा है, उसने प्रभु से कहा, मैंने पाप किया है। मुझ चरवाहे ने गलत काम किया है। ये तो भेड़ें हैं।

उन्होंने क्या किया है? अपना हाथ मुझ पर और मेरे परिवार पर पड़ने दो। डेविड वास्तव में पूरी तरह से समझ नहीं पा रहा है कि यहाँ क्या हो रहा है। वह समझता है कि उसने पाप किया है और वह सोचता है कि देश को उसके किये की सजा भुगतनी पड़ रही है।

दरअसल, यदि आप श्लोक 1 पर वापस जाएं, तो जिस तरह से हम इसे पढ़ते हैं, वह मामला नहीं है। न्याय, परमेश्वर के न्याय का प्राथमिक लक्ष्य इज़राइल, राष्ट्र है। वे ही थे जिन्होंने उसे क्रोध के लिए उकसाया।

दाऊद के साथ हुई बात इस्राएल पर न्याय का भाग है। इसलिए, डेविड का दृष्टिकोण यहाँ सीमित है। उस दिन गाद ने दाऊद के पास जाकर उस से कहा, जाकर यबूसी अरुणा के खलिहान में यहोवा की एक वेदी बना।

तो, नबी आता है और कहता है, तुमने अपना पाप कबूल कर लिया है और तुम्हें एक वेदी बनाने की जरूरत है। इसलिये दाऊद ऊपर गया, जैसा यहोवा ने गाद के द्वारा आज्ञा दी थी। और जब अरुणा ने दृष्टि करके राजा और उसके हाकिमों को अपनी ओर आते देखा, तब वह निकलकर भूमि पर मुंह के बल गिरकर राजा को दण्डवत् किया।

अरुणा ने कहा, मेरा प्रभु राजा आपके दास के पास क्यों आया है? और दाऊद ने उस से कहा, मैं तेरा खलिहान मोल लेना चाहता हूँ, कि यहोवा के लिये एक वेदी बनाऊँ, और प्रजा पर जो विपत्ति पड़े वह बन्द हो जाए। इसलिये दाऊद लोगों के लिये मध्यस्थ के रूप में काम करने जा रहा है। और जैसा कि गाद ने निर्देश दिया था, वह इसे यहीं अरुणा के खलिहान में करना चाहता है।

दिलचस्प बात यह है कि श्लोक 21 में प्लेग के लिए एक अलग शब्द का प्रयोग किया गया है। पिछला शब्द प्लेग की विनाशकारी प्रकृति पर केंद्रित था। यहां उन पूर्ववर्ती छंदों में प्रयुक्त शब्द से भिन्न शब्द का प्रयोग किया गया है।

यह डेबर है। और इस शब्द का उपयोग उस प्लेग के लिए किया जाता है जिसने 1 शमूएल 6 में पलिशियों को सन्दूक वापस लेने पर पीड़ा दी थी। लेकिन फिर अन्य अनुच्छेदों में, यह मनुष्यों के सामूहिक वध का अधिक वर्णन करता है। इसलिए, यह शब्द प्लेग द्वारा लाए गए मानव जीवन के सामूहिक विनाश की ओर ध्यान आकर्षित करता प्रतीत होता है, जबकि दूसरा शब्द सजा के रूप में प्लेग की दंडात्मक प्रकृति पर अधिक ध्यान केंद्रित करता प्रतीत होता है।

सजा के रूप में प्लेग. यह सामूहिक विनाश की महामारी है। और इसलिए, डेविड कह रहा है, मुझे प्रभु के लिए एक वेदी बनाने की ज़रूरत है ताकि मैं लोगों की ओर से हस्तक्षेप कर सकूँ ताकि इस सामूहिक विनाश को रोका जा सके।

और अरुणा ने दाऊद से कहा, भला हो, मेरा प्रभु राजा जो कुछ चाहे ले कर चढ़ाए। यहाँ होमबलि के लिए बैल हैं और आग जलाने के लिए लकड़ी के लिए खलिहान और बैल के जुए हैं। महाराज, अरुणा यह सब राजा को दे देते हैं।

और अरुणा ने उस से यह भी कहा, तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से प्रसन्न हो। इसलिए अरुणा डेविड को उपहार के रूप में बस वही देना चाहती है जो उसे चाहिए। लेकिन डेविड को लगता है, नहीं, यह उचित नहीं है।

मैं इसके लिए भुगतान करने पर जोर देता हूँ। मैं अपने परमेश्वर यहोवा के लिये होमबलि न चढ़ाऊँगा, जिसका मुझे कुछ भी मूल्य नहीं देना पड़ेगा। मेरी ईमानदारी प्रदर्शित करने के लिए इसमें कुछ लागत की आवश्यकता है।

मैं इस मामले में हैंडआउट नहीं ले रहा हूँ। धन्यवाद, लेकिन इसकी कोई ज़रूरत नहीं। इसलिये दाऊद ने खलिहान और बैल मोल लिये, और उनके लिये पचास शेकेल चान्दी दी।

तो, डेविड ने यहां एक कीमत चुकाई है। और तब उस ने यहोवा के लिये वेदी बनाई, और होमबलि और मेलबलि चढ़ाए। और तब यहोवा ने देश की ओर से उसकी प्रार्थना का उत्तर दिया और इस्राएल पर महामारी रुक गई।

तो, मुझे लगता है कि श्लोक 16 में यही हुआ था जब हमने प्रभु को स्वर्गदूत से रुकने के लिए कहते हुए सुना था। और फिर हमें यह विवरण मिलता है जो हमें उस पर पिछली कहानी देता है और अंतराल को भरता है और हमें बताता है कि यह डेविड ने एक शाही पुजारी के रूप में जो किया था, उसके कारण था। उन्होंने लोगों की ओर से हस्तक्षेप किया और इसी ने प्रभु को यरूशलेम पर पूरी शक्ति से प्लेग लाने से रोकने के लिए प्रेरित किया।

और इसलिए, हम डेविड को लोगों के लिए उस भूमिका में कार्य करते हुए देखते हैं। इसलिए, जैसे ही हम अपना अध्ययन समाप्त करते हैं, मुझे लगता है कि हम कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांत देख

सकते हैं जो यहां उभर कर सामने आते हैं। पाप के लिए परमेश्वर की सज़ा कभी-कभी बहुत गंभीर होती है।

यहां तक कि जब पापी क्षमा की भीख मांगते हैं, तब भी आप यहां उससे बच नहीं सकते। यह प्रकरण कुछ हद तक बथशेबा घटना को दर्शाता है। दाऊद ने नम्रतापूर्वक अपना पाप स्वीकार कर लिया, लेकिन फिर भी उसे पाप के दुखद परिणाम भुगतने पड़े।

एक क्रोधी और धोखेबाज देवता का चित्रण, जो भारी संख्या में लोगों का वध करने के बाद ही शांत होता है, अत्यंत भयावह है। यह हमें पाठकों के रूप में ईश्वर की ओर आकर्षित नहीं करता है, लेकिन अगर हम यह मान लें कि सबसे पहले इज़राइल के पाप के प्रति अपनी प्रतिक्रिया में वह उचित था, तो कुछ सच्चाइयों के स्पष्ट होने पर ईश्वरीय दृष्टिकोण को हमारे दृष्टिकोण से प्रतिस्थापित करना होगा। परमेश्वर पाप से घृणा करता है और वह पाप से घृणा करता है और वह इसे सहन नहीं करेगा।

और हमें उस पर काबू पाने की जरूरत है। और वह पापियों को दण्ड देने में पूर्णतः न्यायसंगत है। और यह धैर्य और दया का एक सबक है कि हम ऐसे गंभीर निर्णय के बारे में धर्मग्रंथ के पन्नों से अधिक बार नहीं पढ़ते हैं।

क्योंकि डेविड ने कहानी के ठीक बीच में कहा था, मैं ईश्वर से निपटना पसंद करूंगा, वह दयालु है। तो इसके बीच में भी, डेविड दया के इस विषय को सामने लाता है। और यह महसूस करते हुए कि कैसे पाप दैवीय क्रोध और न्याय को सक्रिय करता है, मुझे लगता है कि हम इस बात के लिए अधिक सराहना प्राप्त करते हैं कि उनके बेटे पर भगवान के क्रोध का प्रकोप क्या हुआ।

मुझे लगता है कि कभी-कभी लोग सूली पर चढ़ने की घटना को देखेंगे कि यीशु को इतना कष्ट क्यों सहना पड़ा? खैर, आप शारीरिक कष्ट में जो देखते हैं वह तो बस हिमशैल का सिरा है। यीशु हमारे पाप अपने ऊपर ले रहे हैं। और जो क्रूरता हम वहां देखते हैं वह सिर्फ एक अनुस्मारक है कि भगवान पाप से नफरत करते हैं और वह यीशु पर अपना फैसला सुना रहे हैं।

और जब तक हम वास्तव में उस वास्तविकता की पकड़ में नहीं आ जाते, मुझे नहीं लगता कि हम सुसमाचार को उस तरह प्रस्तुत करने में सक्षम हो पाएंगे जिस तरह हमें प्रस्तुत करना चाहिए। मैं हर साल राज्य मेले में प्रचार करता हूं। मैं दर्जनों लोगों से सुसमाचार के बारे में बात करता हूं।

और मैं उन्हें उनकी स्थिति की गंभीरता को समझाने की कोशिश करता हूं, कि उन्होंने भगवान के मानकों का उल्लंघन किया है। वे उसकी दृष्टि में पापी हैं और वे दैवीय दंड के अलावा कुछ भी पाने के पात्र नहीं हैं। और जब तक आप उस पर काबू नहीं पा लेते, जब तक आप अपने आप को विनम्र नहीं कर लेते और अपने आप को एक ऐसे पापी के रूप में नहीं देखते जो किसी भी चीज़ का हकदार नहीं है, तब तक आप यीशु ने जो किया उसकी सराहना नहीं करेंगे।

यीशु ने दण्ड, पाप का दण्ड अपने ऊपर ले लिया ताकि हम छुटकारा पा सकें। और इसलिए, इस तरह का एक मार्ग भयावह है, लेकिन यह इस बात का एक अच्छा अनुस्मारक है कि प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से हमें किस चीज़ से छुटकारा मिला है। और एक और बहुत महत्वपूर्ण सिद्धांत

जो हम यहां देखते हैं वह यह है कि भगवान वास्तव में दयालु हैं और जब पापी उनके पास ठीक से आते हैं तो वह अपनी सजा को कम करने के लिए तैयार रहते हैं।

हाँ, शुरू में वह डेविड के कबूलनामे और माफ़ी के अनुरोध को स्वीकार नहीं करता है। नहीं, सज़ा तो मिलनी ही है. वह डेविड को कौन सा विकल्प चुनने का अवसर देता है और इसमें वास्तव में थोड़ी दया है।

और फिर जैसे ही चीजें सामने आने लगती हैं और डेविड न्याय को यरूशलेम की ओर बढ़ता हुआ देखता है, वह प्रभु के सामने जाता है और दया की गुहार लगाता है और प्रभु दया दिखाते हैं और शहर पर अपना न्याय पूरी तरह से डालने से रोकते हैं। हम इसे पुराने नियम में विलापगीत अध्याय 3 में कहीं और देखते हैं, जहाँ से हमें अपना भजन मिलता है। थॉमस चिशोल्म, मेरे नाम, ने एक भजन लिखा, आपकी वफ़ादारी महान है।

सुबह-सुबह मैं नई दया देखता हूँ। यह वास्तव में विलापगीत 3 में निहित है और यदि आप विलापगीत की पुस्तक पढ़ते हैं, तो ये वे विलाप हैं जो यरूशलेम के विनाश के बाद भगवान को अर्पित किए जा रहे हैं। न्याय और मृत्यु के दृश्यों और ध्वनियों से घिरा हुआ, जिसका उन्होंने ग्राफिक विस्तार से वर्णन किया है, लेखक, शायद यिर्मयाह, विलापगीत 3.22 में यह कहने में सक्षम है, कि प्रभु के महान प्रेम के कारण, हम उनकी करुणा से कभी भी प्रभावित नहीं होते हैं।

और फिर वह कहता है, यद्यपि वह दुःख लाता है, तौभी वह करुणा दिखाएगा, उसका अटल प्रेम इतना महान है। इसलिए जब भगवान को अपना फैसला सुनाना होता है, तब भी हम अक्सर उनकी करुणा देखते हैं। और फिर निःसंदेह होशे अध्याय 11 है, जहां ईश्वर एक तरह से पर्दा हटा देता है और हमें उसके हृदय में देखने देता है।

और होशे 11 में, वह याद कर रहा है कि कैसे वह अपने बेटे इसराइल को मिस्र से बाहर लाया था और अपने बेटे की देखभाल की थी। कोई भी व्यक्ति जिसने बच्चों का पालन-पोषण किया है वह प्रभु जो कह रहा है उसकी सराहना कर सकता है। प्रभु आरंभिक दिनों के बारे में सोचते हैं।

लेकिन फिर इज़राइल ने क्या किया? वे बाल की मूर्तियों के पीछे चले गए, और उनकी मूर्तिपूजा का वर्णन होशे की पुस्तक में ग्राफिक विस्तार से किया गया है। वे प्रभु से विमुख हो गए और प्रभु के पास उन पर न्याय लाने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। यदि आप बाल की पूजा करने जा रहे हैं और सोचते हैं कि वह आपके आशीर्वाद का स्रोत है, तो मैं ऐसा नहीं होने दे सकता।

मुझे निर्णय के माध्यम से आपका ध्यान आकर्षित करना है। और वह क्रोधित है और वह इस्राएल पर निर्णय ला रहा है और वह होशे अध्याय 11 में इस निर्णय का वर्णन कर रहा है। लेकिन फिर अचानक, स्वर में बदलाव होता है।

जैसे ही प्रभु अपने पथभ्रष्ट लोगों पर अपना न्याय सुनाते हैं, उनका हृदय बदल जाता है। यह उस पर हावी हो गया है। और उसकी सारी करुणा जाग उठती है।

और यह उसे अपना निर्णय भेजने से पीछे हटने के लिए प्रेरित करता है। वह प्रश्न पूछता है, मैं तुम्हें सदोम और अमोरा के समान कैसे बना सकता हूँ? मैं ऐसा नहीं कर सकता. मैं इतनी दूर नहीं जा सकता.

और इसलिए, उसमें दया है। और फिर वह कहता है क्योंकि मैं भगवान हूँ, इंसान नहीं. इंसान कभी-कभी गुस्से में अंधा हो जाता है।

वे अपनी भावनाओं पर नियंत्रण नहीं रख पाते और अपना गुस्सा दूसरों पर उतार देते हैं। लेकिन भगवान ऐसा नहीं है. वह अपने लोगों के प्रति प्रतिबद्ध हैं।

और उसमें दया है. और इसलिए, मनुष्यों पर बरसते फैसले के बीच, वह करुणा के साथ अपने क्रोध को रोकने और नियंत्रित करने में सक्षम है। इंसानों के विपरीत, वह अपनी भावनाओं को सही संतुलन में रखता है।

इसलिए, हम इस विषय को पुराने नियम में कहीं और देखते हैं। एक भयावह मार्ग, 2 शमूएल अध्याय 24। लेकिन साथ ही, एक मार्ग जहां हम ईश्वर को अपनी करुणा का प्रदर्शन करते हुए, उस निर्णय को रोकने से रोकते हुए देखते हैं जो वह देना चाहता था।

और हम उस करुणा को विलापगीत 3 में यरूशलेम के विनाश के बाद भी देखते हैं। और हम इसे होशे 11 में देखते हैं, जहां भगवान हमारे साथ साझा करते हैं कि वह क्या महसूस कर रहे हैं और भावनाओं का संघर्ष जो वह महसूस कर रहे हैं। और मुझे लगता है कि जिस किसी के पास उड़ाऊ बच्चा है, वह निश्चित रूप से भगवान ने जो कहा है, उससे जुड़ सकता है। ईश्वर इसराइल के प्रति जो क्रोध, निराशा महसूस करता है, लेकिन फिर भी करुणा भी।

तो, इसके साथ, हम यहां सैमुअल की पुस्तकों में अपना अध्ययन समाप्त करते हैं। मुझे आशा है कि आपको यह लाभदायक लगा होगा। मैं आपको अपने भविष्य के बाइबिल अध्ययन में पाठ को बार-बार पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करूंगा, क्योंकि हर बार जब हम इन बाइबिल ग्रंथों को पढ़ते हैं, तो उनका उद्देश्य एक से अधिक बार पढ़ा जाना होता है।

जब भी मैं उन्हें पढ़ता हूँ, मुझे कुछ नया मिलता है, ईश्वर के चरित्र के बारे में एक और अंतर्दृष्टि, हमें उससे कैसे जुड़ना है इसके बारे में एक और अंतर्दृष्टि। इसलिए मुझे आशा है कि आपने अपनी पढ़ाई का आनंद लिया है, और मैं आपको शुभकामनाएं देता हूँ, और आइए प्रार्थना के साथ अपनी बात समाप्त करें।

पिता, हम आपकी करुणा के लिए धन्यवाद करते हैं। हम आपको महान संप्रभु ईश्वर के रूप में पूजते हैं। हम मानते हैं कि आप एक पवित्र ईश्वर हैं जिन्हें पाप का न्याय करना चाहिए, लेकिन हम यह भी समझते हैं कि आप एक दयालु ईश्वर हैं जो क्षमा प्रदान करते हैं और पूरी ताकत से अपना निर्णय भेजने से बचते हैं। हम प्रभु यीशु मसीह के लिए आपका धन्यवाद करते हैं, जिनके माध्यम से हमें मुक्ति मिली है, और जिनके माध्यम से हम आपके साथ संबंध बना सकते हैं।

हमने डेविड के बारे में बहुत कुछ पढ़ा है, और हम मानते हैं कि यह प्रभु यीशु मसीह ही हैं जो आने वाले आदर्श राजा हैं। वह वही है जिसके माध्यम से आप दाऊद से, इस्राएल से और अंततः मानव जाति से किए गए अपने वादों को पूरा करेंगे। हम आपको धन्यवाद देते हैं कि आप अपने लिए लोगों को छुटकारा दिला रहे हैं और हम अपने प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से इसका हिस्सा बन सकते हैं, जिनके नाम पर हम प्रार्थना करते हैं। तथास्तु।

यह डॉ. बॉब चिशोल्म 1 और 2 सैमुअल पर अपने शिक्षण में हैं। यह अंतिम सत्र है, सत्र 28, डेविड इज़राइल पर प्लेग लाता है, 2 सैमुअल अध्याय 24।